प्राक्कथन

राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा प्रणाली के शीर्ष संगठन भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद का देश में कृषि उत्पादकता को बढ़ाने में प्रमुख योगदान रहा है। भा.कृ.अनु.प. सोसायटी के अध्यक्ष के रूप में मुझे डेयर/भा.कृ.अनु.प. की वार्षिक रिपोर्ट 2014-15 को प्रस्तुत करने का गौरव प्राप्त हो रहा है।

वर्तमान सरकार ने कृषि पर मुख्य ध्यान दिया है और परिषद किसानों के खेतों से जुड़े मुद्दों को हल करने में प्रयासरत है, ताकि सतत् उत्पादन सुनिश्चित किया जा सके। इस संदर्भ में मैं भारत के माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के उस दृष्टिपूर्ण भाषण की याद दिलाना चाहूंगा जिसमें उन्होंने नई दिल्ली में आयोजित भा.कृ.अनु.प. के 86वें स्थापना दिवस समारोह में परिषद के योगदानों को सराहा था और 'प्रति बूंद जल से अधिकाधिक फसल लेने' के लिए प्रौद्योगिकियां विकसित करने, मिट्टी के स्वास्थ्य की सुरक्षा, छोटे किसानों के लिए यंत्रीकरण को बढ़ावा देने, दलहनों और तिलहनों के उत्पादन, 'प्रयोगशाला से खेत' कार्यक्रम को सामुदायिक रेडियो व सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के माध्यम से सबल बनाने हेतु कृषि अनुसंधान समुदाय का मार्गदर्शन किया था। परिषद द्वारा इन पहलुओं पर अनुसंधान के एकीकरण, आवश्यकता आधारित शिक्षा और सकल अग्र पंक्ति विस्तार कार्यक्रमों के माध्यम से कार्य किया जा रहा है।

देश का 60 प्रतिशत से अधिक कृषि योग्य क्षेत्र बारानी होने के नाते हमारी कृषि मानसून पर निर्भर है। इसके अतिरिक्त इस वर्ष जम्मू और कश्मीर में आई अप्रत्याशित बाढ़ और आंध्र प्रदेश व ओडिशा में चक्रवात हुदहुद के प्रभाव से यह जरूरी हो गया है कि भारतीय कृषि को बदलती जलवायु के प्रति अनुकूल बनाया जाए। इन आपदाओं के दौरान परिषद के संस्थान व वैज्ञानिक तकनीकी एवं प्रौद्योगिकी सहायता व परामर्श सहित किसानों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चले। 'निक्रा' के साथ हमारे प्रयासों ने 580 आकस्मिक योजनाओं का उदाहरण प्रस्तुत करते हुए जिला स्तर पर कृषि से संबंधित मानसून से जुड़ी समस्याओं से निपटने में सफलता प्राप्त की है। उल्लेखनीय है कि भू-संदर्भित मृदा उर्वरता मानचित्रों से उत्पादन को बढ़ाने, जननद्रव्य के संकलन और जैव विविधता के संरक्षण व उपयोग के लिए जैव संसाधनों के मूल्यांकन में भी सहायता मिलती है। इस वर्ष 30 खोजी अभियानों से 1,591 प्रविष्टियों को संकलित किया गया है, जिनमें 620 वन्य प्रजातियां हैं और 40,879 प्रविष्टियां 38 देशों से आयात की गई हैं। विभिन्न जैविक व अजैविक प्रतिकूल स्थितियों की सहिष्णुता से युक्त सौ से अधिक फसलों की उपजशील किस्में/संकर देश की विविध कृषि पारिस्थितिकियों में खेती के लिए जारी की गई हैं। इसके अतिरिक्त फसलों की कटाई के उपरांत होने वाली क्षति को कम करने के लिए नए उत्पादों व प्रौद्योगिकियों को लोकप्रिय बनाने के प्रयासों से रोजगार के अवसर सृजित हुए हैं, जिनसे किसानों की आय में उल्लेखनीय बढ़ोतरी हुई है।

अनुसंधान एवं विकास संबंधी प्रयासों से ब्रेड-गेहूं जीनोम के क्रम का मसौदा खोजने तथा असील पक्षी के सम्पूर्ण जीनोम का निर्धारण करने व तीन स्तरीय शूकर ज्वर टीका प्रभेदों, *पेस्टे डेस पेस्टिस* रोमंथी विषाणु (पीपीआरवी) और न्यू कैसल रोग विषाणु (एनडीवी) के सुंगरी/96 प्रभेद को तैयार करना उल्लेखनीय अनुसंधान उपलब्धि रही है। 'हस्त-निर्देशित क्लोनीकरण' के माध्यम से उत्पन्न भैंस की प्रथम कटड़ी 'लालिमा' और मुर्रा भैंसे की परीक्षित संतति के हिमीकृत वीर्य की कायिक कोशिका से क्लोनीकृत 'रजत' का जन्म उत्साहवर्धक रहा। गोपशुओं की देसी नस्लों संकोरी, बेलाही और मणिपुरी; गोजरी भैंस; हरिनघाटा काली मुर्गी तथा *प्लेक्ट्राएंथियास एल्कोकी* और *पेम्फेरिस सरयू* जैसी मछलियों के गुणों का लक्षण-वर्णन व संरक्षण महत्वपूर्ण उपलब्धियां हैं।

डेयर/भा.कृ.अनु.प. ने बुंदेलखण्ड क्षेत्र के लिए रानी लक्ष्मी बाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय तथा रांची में भारतीय कृषि जैवप्रौद्योगिकी संस्थान की स्थापना की है, ताकि कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा को और आगे बढ़ाया जा सके। कृषि विज्ञान केन्द्रों, जो भा.कृ.अनु.प. के फार्म विज्ञान केन्द्र हैं, ने प्रौद्योगिकियों के हस्तांतरण के लिए 'प्रयोगशाला से खेत' कार्यक्रमों को लागू करने में तेजी दिखाई है। इस वर्ष असोम के बोंगईंगांव और बक्सा तथा झारखंड के रामगढ़ में कुल तीन नए कृषि विज्ञान केन्द्र स्थापित किए गए हैं। भागीदारी को बढ़ाने के लिए नई सोच वाले किसानों को वर्ष 2014 में, जो पारिवारिक फार्मिंग का अंतरराष्ट्रीय वर्ष था, भा.कृ.अनु.प. की क्षेत्रीय समिति बैठकों में आमंत्रित किया गया। प्रौद्योगिकियों को प्रदर्शित करने वाली प्रदर्शनियों से विभिन्न मंचों पर भा.कृ.अनु.प. की प्रचार-प्रसार गतिविधियों में वृद्धि हुई है। इस वर्ष हमने अनेक संस्थाओं, वैज्ञानिकों और किसानों को उनके श्रेष्ठ कार्य के लिए सम्मानित किया है तथा 16 विभिन्न वर्गों में 89 पुरस्कार प्रदान किए हैं। राजभाषा नीति के कार्यान्वयन के फलस्वरूप 'डेयर' तथा भा.कृ.अनु.प. को इंदिरा गांधी राजभाषा पुरस्कार 2012-13 से सम्मानित किया गया।

विज्ञान-उन्मुख कृषि पर अधिक बल देने के कारण मुझे विश्वास है कि डेयर/भा.कृ.अनु.प. की रिपोर्ट 2014-15 नीति-निर्माताओं व किसानों को बहुमूल्य सूचना व मार्गदर्शन प्रदान करेगा। भारतीय कृषि के सभी पहलुओं में सतत् वृद्धि सुनिश्चित करने के लिए अधिक साझेदारियां प्राप्त करना हमारा मुख्य प्रयास है।

(राधा मोहन सिंह)
अध्यक्ष
भा.कृ.अनु.प. सोसायटी